International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 1; January 2018; Page No. 32-33

मध्यकालीन मालवा के प्रमुख उद्योग धंधे एवं उनका प्रबंधन

डॉ॰ सुधा टेटवाल
अतिथि व्याख्याता, पं. बालकृष्णध्य शर्मा 'नवीन' स्नातकोत्तर महाविद्यालय शाजापुर, मध्य प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

मध्यकालीन भारत में मुगल युग में राजनैतिक स्थिरता के कारण वाणिज्य व्यापार एवं उद्योग–धंधों का बहुत विकास हुआ।

सोलहवी शती के मालवा के सुल्तानों ने भी उद्योगों के विकास व्यापार के विस्तार एवं वाणिज्य की उन्नति में काफी रूचि ली। उन्होंने व्यापारियों एवं उद्योगों को पूर्ण संरक्षण प्रदान किया। चुंकि शासक, अमीर एवं उच्च वर्ग के लोग शान–ओ–षौकत का जीवन जीते थे अतः उनकी माँगों की पूर्ति के लिए भी अनेक उद्योग–धंधे पनपे एवं व्यावसायों को प्रोत्साहन मिला। शासकीय संरक्षण के कारण पूंजी का चलन बाजार में तेजी से हुआ। प्राकृतिक समृद्धि भी यहाँ के उद्योगों को फलने–फूलने में सहायक सिद्ध हुई।

वस्त्र उद्योग

वस्त्र उद्योग मालवा का एक प्राचीन उद्योग था। सूती वस्त्र का कच्चा माल कपास था। कपास से आवश्यकतानुसार वस्त्र बनाए जाते थे। सूत कातना ग्रामीणों का एक लघु उद्योग था। मालवा में कपास की पैदावार प्रचुर मात्रा में होती थी। प्राचीनकाल से ही मालवा में वस्त्र उ़द्योग फल–फूल रहा था। युति कल्प रूप से जो सूचना हमें मिलती है। उसके अनुसार ''कपास और उसके धागे से कपड़ा बनाने वाले बुनकरों ने अनेक प्रकार के कपड़ों का निर्माण किया था।'' चीनी यात्री चाऊ फू कूवा के अनुसार मालवा में वस्त्र उद्योग उन्नति पर था।[1] नवी शताब्दी में सुलेमान नामक अरब यात्री मालवा में आया था। उसने यहाँ के वस्त्र उद्योग के बारे में लिखा है कि ''यहाँ के निवासी ऐसा वस्त्र तैयार करते है जो दुनिया में कही नहीं मिलता। यहाँ के बने वस्त्र को अंगूठी में से निकाला जा सकता है। मालवा के तंतुवायों की कई श्रेणियों का उल्लेख हमें प्राचीन ग्रंथों एवं शिलालेखों से मिलता है।[2]

शासकों द्वारा अतिथियों को वस्त्र भेंट में दिये जाते थे। राल्फ फिच ने भी अपने यात्रा विवरण (1583–91) में सिरोंस के वस्त्र व्यवसाय का उल्लख किया है [3] वस्त्र उद्योग के प्रमुख केन्द्र चंदेरी, महेष्वरी, सिरोंज, हासिलपुर, भेलसा, मंदसौर, धार आदि थे। महेष्वर एवं चंदेरी सूती एवं रेशमी साड़ियों के निर्माण के लिये विख्यात थे। यहाँ चांदी एवं सोने के तारों से युक्त वस्त्रों का निर्माण किया जाता था। इनका नियतित भी किया जाता था। इब्नबतूता ने भी चंदेरी की साड़ियों का उल्लेख किया है।

टेवर्नियर ने भी सिरोंज निर्मित महीन वस्त्र का उल्लेख किया है जिसका प्रयोग शासक एवं उच्च वर्ग के लोग उनकी स्त्रियाँ गर्मी में इस्तेमाल करना पसंद करते थे।[4]

मलवा के रंगीन एवं बुने हुए कपड़े को छीट कहा जाता था। यह सभी स्थानों पर मिलता था। इस कपड़े की विदेशों में भी मांग थी। सिरोंज की छींट काफी प्रसिद्ध थी। इसके बारे में ऐसा प्रचलित था कि सिरोंज के कपड़े नए नहीं दिखते फिर भी जितना अधिक धुलते थे इनका रंग उतना निखरते जाता था। इसका कारण सिरोंज के पास बहने वाली नदी का पानी था।[5] मालवा की इस छींट की ईरान तथा टर्की में बहुत माँग थी। यहाँ की छींट का व्यापार मुल्थानियों एवं आरमेनियाई व्यापारियों के हाथों में था जो यहाँ आकर बस गये थे। इस प्रकार मालवा से विदेशी व्यापार भी होता था। छींठ के अतिरिक्त सिरोंज में तम्बू, चादरें, पलंगपोश आदि बनाने का कार्य भी खूब होता था। सुल्तानों के छत्र, तंबू आदि यहीं बनते थे। इनमें स्वर्ण चाँदी का कार्य एवं पत्थर जड़े जाते थे। हाथियों, घोड़ों की कसीदा युक्त झालर भी यही बनती थी।[6]

मलवा में रेशमी वस्त्रों का निर्माण भी किया जाता था। रेशमी वस्त्र बाहरी देशों को निर्यात भी किया जाता था। रेशमी वस्त्र उच्च वर्ग के लोग अधिक पहनते थे। इसके निर्माण के मुख्य केन्द्र हासिलपुर, महेष्वर, चंदेरी और सारंगपुर थे। इन वस्त्रों में जरी का कार्य होता था एवं सोने, चाँदी के महीन तारों से सुन्दर बेलबूटे अबु–उल–फजल ने हासिलपुर में तैयार इस प्रकार के वस्त्रों की प्रशंसा की है एवं इन्हें 'अमन' एवं 'खास' कहा है।[7]

वस्त्र उद्योग से संबंधित जरी का कार्य इस काल में काफी प्रगति पर था। वस्त्रों पर सोने, चाँदी के तारों के साथ मोती जड़ने की कला एवं उन पर सुन्दर बेलबूटों का निर्माण मालवा की विशेषता बन गये थे।

धातु एवं खनिज उद्योग

मालवा में प्राचीन काल से ही विभिन्न धातुओं एवं उनके कारीगर कार्यरत थे। इनमें लोहे महत्वपूर्ण धातु था। शासकों ने भी लोहारों को संरक्षण प्रदान कर रखा था। युद्ध में काम आने वाले लोहे व अन्य धातुओं के हथियार यहाँ बनाए जाते थे। इसके अतिरिक्त घरेलू उपकरण और कृषि कार्य के औजार भी बनाऐ जाते थे। नलपुर भेलसा की तलवारे सारे देश में प्रसिद्ध थी। फिरदौरी द्वारा शाहनामें से पता चलता है कि ईरानी बादशाहों के पास भारत निर्मित तलवारे एवं कटारे थी। इन्हें मालवा के सिरोंज एवं भेलसा से ही मंगवाया गया था।[8]

मालवा के पठार में विध्यांचल की पर्वतमाला एवं नर्मदा घाटी है। साथ ही सतपुड़ा की श्रेणियाँ एवं ताप्ती नदी का क्षेत्र इससे लगा क्षेत्र है अतः सीमित मात्रा में यहाँ खनिज सम्पदा उपलब्ध थी। अनेक प्रकार एवं रंगों के पत्थर इन्हीं क्षेत्रों से प्राप्त होते थे। भवन एवं मूर्ति निर्माण के लिए उपयोग में आने वाला लाल पत्थर भेलसा, मंदसौर, गुना आदि क्षेत्रों मे पाया जाता था। खड़िया मिट्टी, चूना, स्लेट आदि का पतर धार, मंदसौर और नर्मदा घाटी के आसपास से मिलता था।[9] मालवा से जो खनिज बाहर भेजे जाते थे। उनमें लोहितां, अफ्रीक, संगेषाह प्रमुख थे। स्वर्णाभूषण चाँदी तथा हीरे–जवाहरातों की बड़ी मांग थी। अबु–उल–फजल ने भी लिखा है ''कि उज्जैन, चंदेरी, भेलसा, रायसेन आदि नगरों में उच्च कोटि के सुनार व जौहरी निवास करते है।''

अन्य उद्योग

प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल तक मालवा में उज्जैन एक ऐसा व्यापारिक मार्ग रहा है, जो वहाँ से गुजरने वाले प्रत्येक व्यापारी के लिए आकर्षण का केन्द्र था। यहाँ बने लकड़ी के सामान की बहुत मांग थी। मध्यकाल में मालवा में जहाज निर्माण उद्योग भी अत्यधिक विस्तृत था।

हाँथी दांत का कार्य भी किया जाता था। इसके कारीगर (दंतकार) उज्जयिनी तथा भेलसा में थे। डॉ. यू.एन.डे. व शाहिब हकीम लिखते है कि मालवा में आतिशबाजी का निर्माण खुब होता था। अग्निबाण, चरखियाँ, आतिशबाजी में भी हाथी, ऊँट के आकार निर्मित होते थे।[10] चमड़ा उद्योग भी यहाँ विकसित था। चमड़े की जो वस्तुएँ बनती थी उनमें तलवारे तथा कटार की म्याने जूत, चप्पल, पानी की मशक, किताबों की जिल्दे तथा वस्त्र आदि आते थे। चावल तथा फलों की शराब बनाने का उद्योग भी प्रचलन में था।

प्रबंधन

मध्यकाल में भारतवर्ष में मुस्लिमों के प्रवेश से सल्तनत एवं मुगलकाल में कई अतिथि आर्थिक गतिविधियाँ हमें परिवर्तित होती दिखाई देती है। सम्पूर्ण भारतवर्ष में मुस्लिमों के साथ ही अनेक उद्योगों एवं उनके प्रबंधन का कार्य भी प्रारम्भ हो गया था। मुगलों ने भवनों के निर्माण, सड़कों के निर्माण में नई तकनीकों को विकसित किया।

मुगलों ने भवन निर्माण, वास्तुकला और उनकी मरम्मत का काम देखने के लिए अफसरों का एक पूरा दल होता था । पहला वर्ग अफसरों व भवन निर्माण विशेषज्ञों का होता था। जिनका कार्य निर्माण कार्य का निरीक्षण व मकानों व इमारतों की योजनाओं या उन पर होने वाले खर्चों का निरीक्षण करना था। दूसरा वर्ग मजदूरों व दस्तकारों का होता था। अबुल कजल के अनुसार दो प्रकार के मजदूर होते थे। कुशल मजदूर (इजारा) जिन्हें निर्दिष्ट नाप जोख करने का सुनिश्चित ज्ञान था व दूसरे दैनिक वेतन मजदूर (रोजदार) होते थे। मजदूरी कारिगरों की विशेषता के अनुसार दी जाती थी। जैसे पत्थर तराश को कुशल पत्थर नक्काश से कम वेतन दिया जाता था। मुगल काल में सड़क निर्माण और उसके रख–रखाव केन्द्रीय शासन की देख–रेख में ''मीर बहर'' विभाग द्वारा किया जाता था। आमतौर पर सड़कों का निर्माण सर्दी या गर्मी के महिनों में करवाया जाता था।[11]

उद्योग–धंधों के प्रबंधन के लिए मध्ययुगीन शासकों के विलास उनके परवादों, अंतःपुरों को साज–सज्जा एवं शान–ओ–शौकत के लिए जिन वस्तुओं की आवष्यकता होती थी। उनका निर्माण सामान्य बाजार में होना कठिन था। अतः सभी प्रार के उद्योग–धंधों के प्रबंधनके लिए मुगल कारखानों का अस्तित्व था। मुगल इसके लिए 'बयूताने' शब्द का प्रयोग करते थे। मुगलकाल में विभिन्न प्रकार के उद्योगों एवं वस्तुओं के निर्माण का प्रबंध राज्य की और से किया जाता था। जिसमें व्यापारियों एवं शिल्पियों के निजी कारखाने भी होते थे।

आइन–ए–अकबरी से पता चलता है, कि अकबर के समय में राज्य की ओर से अनेक स्थानों में सूती वस्त्र, रेशम, ऊन, चमड़ा, शीशा, सोने, चांदी आदि के उद्योगों के लिए कारखाने खोले गए। अहमदाबाद में सुनहले एवं रूपहले फूलों से चित्रित रेशमी वस्त्र, सोने–चांदी के आभूषण व जवाहरात तैयार किये जाते थे व बुरहानपुर में बढ़िया सफेद तथा रंगीन वस्त्र, कमरबंद और सोफ (सोने–चांदी) से मढ़े हुए तैयार शिल्पी कार्य करते थे। यदि किसी योग्य शिल्पी का पता चलता तो उसे बुलाकर अच्छी तनख्याह पर नियुक्त कर दिया जाता था। प्रांतों के अमला और जागीरदारों को ताकीद (निर्देश) थी कि वे कार्यकुशल शिल्पियों का पता लगाकर उनकी खबर केन्द्रीय सरकार को दें।[12]

मुगलकालीन भारत में समस्त प्रकार के उद्योगों का प्रबंधन राज्य की और से किया जाता था, जिसके लिए सम्पूर्ण भारवर्ष में विभिन्न व्यापारिक केन्द्रों पर बड़े–बड़े कारखाने खोले गये एवं इनमें भारत एवं बाहर से आए विभिन्न कारीगरों को कुशलता के आधार पर कारखानों में रखा जाता था। समय–समय पर इन कारीगरों के प्रबंधन के लिए राज्य की ओर से पर्याप्त सुविधाएँ थी। शाहजहाँ के काल तक इन्हीं कारीगरों की दशाएँ प्रायः अच्छी रही, पर उनके बाद इनकी दशाओं में अंतर आने लगा एवं इन पर अत्याचार बढ़ने लगा।

सन्दर्भ

1. Jain K.C. 'Malwa, Through the Ages' Delhi- 1972
2. द्विवेदी एच.एम. 'मध्यभारत का इतिहास', ग्वालियर 1959
3. Foster William 'Early Travels in India (1583-1619) oxford- 1921
4. ट्रेवनिर्यर : ट्रेवल्स इन इंडिया 1 पृ. 1640–67
5. ट्रेवनिर्यर : पूर्वोक्त भाग 1 पृ. 56
6. डे.यू.एन. : मेडिवल मालवा पृ. 362
7. फजल–अबुल : आइन–ए–अकबरी 2 पृ. 213, 217
8. द्विवेदी एच.एम. पूर्वोक्त पृ. 20, 21
9. डे.यू.एन. पूर्वोक्त पृ. 359
10. Foster William 'Early Travels in India (1583-1619) oxford- 1921
11. वाजपेयी कृष्णदत्त : 'भारतीय व्यापार का इतिहास' पृ. 226–228
12. वाजपेयी कृष्णदत्त : पूर्वोक्त पृ. 318